नजानू की कहानियाँ

निकोलाई नोसोव



१५

अस्पताल की दास्तान

रादुगा प्रकाशन · मास्को



नजानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव

१५

अस्पताल की दास्तान

अनुवादक:
संगमलाल मालवीय

चित्रकार:
बोरीस कलऊशिन



रादुगा प्रकाशन · मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर-302001





तुषारिका, नीलाक्षी और नजानू अस्पताल के गेट पर पहुंचकर रुक गये। तुषारिका ने घण्टी का बटन दबाया। घण्टी बज उठी: "झन्न-झन्न!" गेट खुल गया। दहलीज़ पर एक नर्स खड़ी थी—सफ़ेद गाउन पहने और टोपी लगाए, जिसके नीचे से सुनहरी-सी घुंघराली लटें झूल रही थीं।

"हाय रे, एक और मरीज़," नर्स ने उन्हें देखते ही ठण्डी सांस ली। "यहां भर्ती के लिए जगह नहीं है, यकीन करें! अजी, ये कहां से आ टपके? पूरे साल हमारा अस्पताल खाली था, इलाज के लिए कोई नहीं आया। लेकिन आज ही चौदह मरीज़ भर्ती हो चुके हैं।"

"यह छुटका मरीज़ नहीं है," तुषारिका ने कहा। "यह तो अपने दोस्तों से मिलने आया है।"

"अगर ऐसा है, तो अन्दर आ जाइये।"

वे तीनों डाक्टर के कमरे में पहुंचे। मधुरिमा मेज़ पर बैठी कुछ लिख रही थी। उसके सामने मरीज़ों के ढेर सारे कार्ड रखे थे, जिन पर मर्ज़ों के ब्योरे लिखे जाते हैं। तुषारिका और नीलाक्षी को देखते ही उसने कहा:

"कहिये, मरीज़ों से मिलने आए हैं? पर उनसे मिलना कतई मना है। आप लोग भूल जाते हैं कि मरीज़ों को आराम की ज़रूरत होती है। अरे, नीलाक्षी, आपके माथे पर तो प्लास्टर लगा है? बहुत खूब! मैंने तो पहले ही सोचा था कि यही होगा। घर में एक छुटका आया नहीं, कि आफ़त शुरू हो जाती है। कहीं किसी के नीले निशान पड़ते हैं, कहीं गुमटे उभरते हैं। ऐसी है इन छुटकों की मेहरबानी!"

"हम लोग मरीज़ों से नहीं मिलेंगे," नीलाक्षी ने उत्तर दिया। "मरीज़ों से तो यह छुटका मिलना चाहता है, उसके दोस्त यहां भर्ती हैं।"

"हुं, अरे, इसे तो मैंने बिस्तर पर लेटने के लिए कहा था। पर ये जनाब डाक्टर का कहना नहीं मानते, और उसके चेहरे से ही दिख रहा है कि यह किसी से लड़ चुका है। मैं उससे मिलने की अनुमति नहीं दे सकती। अस्पताल कोई अखाड़ा नहीं है।"

"मैं लड़ूंगा नहीं," नजानू ने उत्तर दिया।

"नहीं, नहीं!" मधुरिमा ने सख्ती से कहा और मेज़ को अपने भोंपूनुमा स्टेथिस्कोप से खटखटाया। "छुटके हमेशा यही कहते हैं: 'अब मैं नहीं लड़ूंगा।' लेकिन थोड़ी देर में ही फिर लड़ने लगते हैं।"

नजानू से बात खत्म करके मधुरिमा नीलाक्षी की ओर मुड़कर बोली:

"दिखाइये आपके ज़ख्म का क्या हाल है।"

उसने प्लास्टर हटाया और नीलाक्षी का माथा देखने लगी।

"प्लास्टर की अब कोई ज़रूरत नहीं," मधुरिमा ने डाक्टरी जांच के बाद कहा। "चलिये, आपके माथे की बिजली से सेंकाई कर दें, ताकि नीला दाग मिट जाए।"

वह नीलाक्षी को साथ लेकर कमरे से बाहर निकली। नजानू ने देखा कि हैंगर पर सफ़ेद गाउन और टोपी टंगी है। उसने आव देखा न ताव, गाउन पहना, टोपी लगाई और अब आंख पर ऐनक लगाया, जिसे मधुरिमा जाते वक्त मेज़ पर छोड़ गई थी। इस तरह नजानू डाक्टरी लिबास में स्टेथिस्कोप लेकर निकल पड़ा कमरे के बाहर। तुषारिका उसे जिज्ञासु नज़र से देख रही थी, वह उसके साहस और बुद्धि कौशल पर हैरान थी।

अस्पताल का गलियारा पार करके उसने एक दरवाज़ा खोला और उस वार्ड में पहुंचा, जहां उसके दोस्त छुटके भर्ती थे। वह पहली पलंग के पास आया, देखा कि बड़बड़िया बिस्तर पर लेटा है, चेहरा उदास और खीझा हुआ है।





"कहिये, कैसी तबियत है?" नजानू ने आवाज़ का लहजा बदलते हुए कहा।

"बहुत अच्छी!" बड़बड़िया ने कहा और ऐसा मुंह बनाया जैसे कि बस दम निकलने ही वाला है।

"अच्छा, तो उठिये," नजानू ने कहा।

बड़बड़िया बेमन रो उठा और फिर झट से बिस्तर पर बैठ गया, बुझी-बुझी आंखों से सीधे सामने देख रहा था। नजानू ने मरीज़ के सीने पर स्टेथिस्कोप लगाया।

"ज़रा गहरी सांस लीजिये," उसने कहा।

"अजी, यह क्या तमाशा है!" बड़बड़िया ने बड़बड़ाते हुए कहा। "कभी कहते हैं उठिये, कभी लेटिये, कभी गहरी सांस लीजिये, कभी सांस रोके रहिये।"

नजानू ने बड़बड़िया के सिर पर स्टेथिस्कोप को टकराकर कहा:

"यार बड़बड़िया, रहे वही के वही, हमेशा की तरह बड़बड़ाते रहते हो।"

"अरे, नजानू तुम!" बड़बड़िया उसे हैरानी से देखते हुए कह उठा।

"शी-शी!" नजानू ने धीरे-से कहा।

"भाई नजानू, मुझे इस चक्कर से छुटकारा दिलाओ," बड़बड़िया ने फुसफुसाते हुए कहा। "यकीन करो, मैं भला-चंगा हूं। मेरे घुटने में चोट लगी

थी। पर अब दर्द लगभग नहीं है। लेकिन ये लोग मुझे बिस्तर से उठने ही नहीं देते, न मेरे कपड़े ही वापस करते हैं। अजी, मैं आजिज़ आ गया हूं! मैं बाहर घूमना-फिरना चाहता हूं!"

बड़बड़िया ने नजानू की आस्तीन पकड़ ली और उसे छोड़ ही नहीं रहा था।

"अच्छा, ज़रा धीरज से काम लो," नजानू ने उत्तर दिया, "मैं कोई उपाय सोचूंगा। पर वायदा करो, जो मैं कहूंगा, वही तुम करोगे। समझे? और अगर छुटकियां पूछें कि गुब्बारा किसने बनाया, तो कहना नजानू ने।"

"हां, हां, जो चाहोगे, वही कहूंगा। बस, मुझे यहां से छुट्टी दिला दो," खुश होकर बड़बड़िया ने कहा।

"फ़िक्र न करो," नजानू ने वायदा किया।

तब वह अगले पलंग के पास पहुंचा, जहां डाक्टर टिकियावाला लेटा हुआ था।

"यार, बचाओ!" डाक्टर टिकियावाला मद्धिम स्वर में गिड़गिड़ाया। "देखो





न, मेरी क्या हालत हो गई है! ज़िन्दगी भर दूसरों का इलाज करता रहा, अब यहां मेरा इलाज हो रहा है।"

"पर तुम तो बीमार हो, न?"

"अजी, कोई बीमारी हो तब न! भाई, मैं तो भला-चंगा हूं। सोचो ज़रा, ऐसे आदमी को अस्पताल में कैसे रख सकते हैं, जिसकी बस दो मामूली खरोंचें हैं: एक—नाक के नीचे, दूसरी—कन्धे पर।"

"लेकिन तुम्हें यहां किसलिए रोका गया है?"

"बस, इसलिए कि सारा अस्पताल खाली है और उन्हें कोई न कोई मरीज़ चाहिए। डाक्टरी की सनक सवार है। वाह री, छुटकियां! इलाज भी खूब करती हैं! लानत है! अजी, ज़ख्म पर शहद की पट्टियां बांधते हैं और शहद पिलाते हैं। यहां तो बेतुका इलाज किया जाता है। घाव पर आयोडीन लगाना चाहिए, कॉस्टर आयल पिलाना चाहिए। यह इलाज नहीं, नीमहकीमी है। मैं ऐसे इलाज को नहीं मानता।"

"भाई, मैं भी सहमत नहीं हूं," बगल की पलंग से कदाचित् ने कहा। "अब देखिये न, यहां चलना-फिरना मना है, दौड़ना मना है, आंख-मिचौली और आइस-पाइस खेलना भी मना है। और तो और, गाइये भी नहीं। सभी के कपड़े

जमा हैं, अस्पताल के कपड़े और तौलिये मिले हैं। पड़े रहो बिस्तर पर नाक सुड़कते और पोंछते! बस, हो गई फ़ुर्सत!"

"आप यहां कैसे आए?"

"कल रात हम लोग गुब्बारेवाली टोकरी से गिरे और सो गए। सुबह होते ही कुछ छुटकियों ने हमें जगाया और पूछताछ करने लगीं। हमने बताया कि गुब्बारे में उड़कर आए हैं, दुर्घटना का शिकार हो गए हैं। 'दुर्घटना?' वे हैरानी से बोलीं। 'हाय रे, चलिये, हमारे अस्पताल में भर्ती हो जाइये।' और आप देख ही रहे हैं कि हम लोग अस्पताल में भर्ती हैं।"

"यानी कोई भी ज़ख्मी नहीं है?" नजानू ने पूछा।

"नहीं। बस, गोलीबाज़ ही ज़ख्मी है।"

नजानू गोलीबाज़ के पास आया।





"अजी, तुम्हें क्या हुआ है?"

"मेरे घुटने की हड्डी खिसक गई है। मैं बिल्कुल चल-फिर नहीं सकता। मुझे इसका कतई अफ़सोस नहीं। अफ़सोस है बेचारे ग़ुर्रा का, मिल ही नहीं रहा है। भाई, मेहरबानी करो, मेरे ग़ुर्रा को ढूंढ़ दो। वह कहीं आसपास ही होगा। मैं तो अपनी जगह से हिल भी नहीं सकता।"

"फ़िक्र न करो," नजानू ने कहा। "मैं तुम्हारे ग़ुर्रा को ढूंढ़ लाऊंगा, लेकिन तुम सबसे यही कहना कि गुब्बारा मैंने ही बनाया है। रही बात पक्की?"

नजानू अस्पताल में भर्ती सभी छुटकों से मिल आया और सहेज आया कि वे सबसे यही कहें कि गुब्बारा उसने ही बनाया है। अन्त में वह डाक्टर के कमरे में लौट आया। तुषारिका बड़ी बेचैनी से उसका इन्तज़ार कर रही थी।

"कहिये, मरीज़ों के क्या हाल हैं?" उसने पूछा।

"अजी, कैसे मरीज़, सभी तो ठीक-ठाक हैं," नजानू ने मुस्कराकर कहा। "सिर्फ़ गोलीबाज़ ही थोड़ा ज़ख्मी है।"

"तब तो उन्हें जल्द ही छुट्टी मिल जाएगी?" तुषारिका ने चहकते हुए पूछा। "जानते हैं, मेरा क्या इरादा है? हम लोग छुटकों के स्वास्थ्य लाभ की खुशी में बॉल-नृत्य का आयोजन करेंगे। खूब मज़ा आएगा!"

"लेकिन लगता नहीं कि उन्हें जल्द ही छुट्टी मिल जाएगी," नजानू ने कहा।

इसी समय मधुरिमा और नीलाक्षी लौट आईं।

"आपने यह गाउन क्यों पहना? यह मनमानी किसलिए?" मधुरिमा ने नजानू की ओर झुकते हुए कहा।

"इसमें कोई मनमानी नहीं," नजानू ने कहा। "मैं तो अस्पताल का मुआयना करने गया था।"

"हां, तो मुआयने में आपने क्या देखा?" मधुरिमा ने व्यंग्य से पूछा।

"यही कि सिर्फ़ एक को छोड़कर सब स्वस्थ हैं और उन्हें डिस्चार्ज किया जा सकता है।"

"अजी, क्या कहते हैं आप?" मधुरिमा ने सहमते हुए कहा। "ज़रा सोचिये,



उस वक्त क्या होगा, जब चौदह छुटकों को एक साथ छोड़ दिया जाएगा? वे सारा शहर सिर पर उठा लेंगे! खिड़कियों का एक भी शीशा साबुत न बचेगा। किसी की खैर न रहेगी, सबके शरीर पर गुमटे और नीले निशान दिखाई देंगे। इसलिए ज़रूरी है कि छुटकों को अस्पताल में ही रहने दिया जाए, ताकि शहर में नीलों और गुमटों की महामारी न फैले।"

"शायद एक-एक करके छुटकों को छोड़ा जा सकता है?" नीलाक्षी ने कहा। "एक दिन में एक छुटके को।"

"एक दिन में एक—यह तो कम है। शायद दो को छोड़ना ठीक होगा। हम लोग उनके साथ मिलकर बॉल-नृत्य भी तो करना चाहते हैं।"

"तो फिर ठीक है," मधुरिमा ने सहमत होकर कहा। "हम लोग छुटकों की एक लिस्ट बनाएंगे और कल से ही उन्हें एक-एक करके छोड़ना शुरू कर देंगे।"

तुषारिका ने उमंग से तालियां बजायीं और मधुरिमा से लिपटकर उसे मनाने लगी:

"लेकिन एक नहीं, दो! दो! मैं कितनी बेताब हूं कि उन्हें झट से छुट्टी मिल जाए। आखिर आप भी तो नाचना चाह रही होंगी! क्या गज़ब का नाचती हैं आप!"

"तो चलो, तुम्हारी ही बात रही। दो छुटके ही एक दिन में छोड़े जाएंगे," मधुरिमा ने नर्म पड़ते हुए कहा। "शुरूआत हम सबसे विनयशील छुटकों से करेंगे। इस काम में आप हमारी मदद करिये," उसने नजानू की ओर मुड़ते हुए कहा। "कहिये, सबसे विनयशील छुटके कौन-से हैं?"

"अजी, विनयशील तो सभी छुटके हैं!"

"इस पर मुझे विश्वास नहीं। छुटकों में विनयशीलता होती ही नहीं। ज़रूरी है कि उनके लिए कोई न कोई काम ढूंढ़ रखा जाए, ताकि वे शैतानियां भूलकर काम में उलझे रहें।"

"अगर ऐसा ही है, तो सबसे पहले मोड़ू और पेंचू को छोड़ दिया जाए। वे अस्पताल से बाहर निकलते ही कार की मरम्मत में जुट जाएंगे," नीलाक्षी ने कहा।

"ख्याल अच्छा है!" मधुरिमा ने कहा। "तो हम मोड़ू और पेंचू से ही शुरूआत करते हैं।"

मोड़ू और पेंचू के नाम एक कागज़ पर लिख लिए गए।





"अब इनके बाद बड़बड़िया का नम्बर है," मधुरिमा ने कहा। "नाक में दम किए रहता है। हर वक्त बड़बड़ाता है, किसी को चैन नहीं लेने देता।"

"अरे, नहीं, नहीं! उसे अभी अस्पताल में ही रहने दीजिये," नजानू ने कहा। "वह बहुत ज़्यादा बड़बड़ाता है, इलाज होना चाहिए।"

"तो फिर डाक्टर टिकियावाला के बारे में क्या ख्याल है? वह हमारे अस्पताल से बड़ा नाखुश है। हर समय हमारे इलाज का मखौल उड़ाता है। नकचढ़ा मरीज़ है। उसे छोड़ने में मुझे कोई एतराज़ नहीं।"

"नहीं, डाक्टर टिकियावाला को यहीं रहने दीजिये," नजानू ने अक्ल दौड़ाई। "वह सारी ज़िन्दगी दूसरों का इलाज करता रहा, अब उसका इलाज हो जाने दो! बेहतर हो कि ट्यूबेश को छोड़ दिया जाए। वह एक श्रेष्ठ चित्रकार है, ऐसे छुटके के लिए काम ढूंढ़ने में दिक्कत न होगी। आखिर मेरा शिष्य है न। मैंने ही उसे चित्रकारी सिखायी है।"

"सचमुच!" तुषारिका ने हैरानी से कहा। "क्या उसे आज ही छुट्टी नहीं दी जा सकती? मैं उससे कहूंगी कि वह मेरा एक चित्र बना दे।"

"और बाजाबाज़ के बारे में क्या ख्याल है?" नजानू ने एक नाम और जोड़ दिया। "वह भी मेरा शिष्य है। मैंने ही उसे बांसुरी बजाना सिखाया है।"

तुषारिका फिर से मधुरिमा के गले में लिपट गई और मिन्नतें करने लगीं:

"ट्यूबेश और बाजाबाज़ को छोड़ दीजिये! मेहरबानी करके!"

"ठीक है, तो इनके लिए खास रियायत बरती जाएगी।" मधुरिमा का स्वर नर्म पड़ गया। "लेकिन बाकी मरीज़ों को क्रमवार छोड़ा जाएगा।"

आखिरकार वन ही गई मरीज़ों की लिस्ट। मधुरिमा ने आदेश दिया कि ट्यूबेश और बाजाबाज़ के कपड़े वापस दिए जाएं। कुछ देर बाद वे दोनों खुशी-खुशी मधुरिमा के कमरे में आ पहुंचे।

"आप लोगों को अस्पताल से मुक्त किया जाता है," मधुरिमा ने कहा। "लेकिन खबरदार, कोई बेजा हरकत नहीं होनी चाहिए। अगर शिकायत मिली तो फिर अस्पताल में भर्ती कर दिया जाएगा।"



Н. Носов
В БОЛЬНИЦЕ
На хинди

N. Nosov
IN THE HOSPITAL
In Hindi

ISBN 5-05-000982-0
ISBN 5-05-002413-7







अगर नजानू और उसके दोस्तों की कहानी आपको दिलचस्प लगे तो फूलनगर के अनूठे वासियों की आगे की घटनाएं आप इन पुस्तकों में पढ़ सकते हैं:

मौज का रंग

सफ़र